

Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 21/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -
Psychoanalytic Therapy

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मौलिक चिकित्सा पद्धति, मनोवैश्लेषिक चिकित्सा के नाम से जानी जाती है। यद्यपि इसमें बाद में कई परिमार्जन किए गए फिर भी उसके मूल तत्त्व लगभग वही रहे जो मूल पद्धति में हैं। परम्परागत मनोवैश्लेषिक चिकित्सक की प्रमुख मान्यता यह है कि स्नायुविकृत चिंता व्यक्ति में उस समय उत्पन्न होती है जब बचपन के दंडित एवं दमित उपाहम आवेग अपनी अभिव्यक्ति के लिए अहम को धमकाता है। मनोवैश्लेषिक चिकित्सा द्वारा इस आरम्भिक दमन को हटाने का प्रयास किया जाता है ताकि व्यक्ति बाल्यावस्था तक इस मानसिक संघर्ष को समझने में सफल हो सके और उसे वयस्कावस्था की वास्तविकता में दूर कर सके। इस दमन को हटाने के लिए मनोविश्लेषक कई तरह की प्रविधियों का सहारा लेते हैं जिनमें मुक्त साहचर्य, स्वप्न विश्लेषण तथा रक्षा प्रक्रमों का विश्लेषण आदि प्रमुख हैं।

(1) मूर्छा विधि-इस विधि के द्वारा फ्रायड रोगियों को अचेतन अवस्था में करके उससे प्रश्न पूछता था।

(2) सम्मोहन या मोह-निद्रा (Hypnosis)- इस विधि में रोगी ऐसी बातों को कह डालता था जिससे उसके संवेगात्मक कष्टों का पता लग जाता था। मोह-निद्रा की अवस्था में रोगी अज्ञात चेतना के सहारे अपनी उन सभी बातों को प्रकट कर देता था जिन्हें वह चेतन अवस्था में लज्जा, भय या संकोच के कारण नहीं बता पाता था। अचेतन अवस्था में सम्मोहन की स्थिति में कही हुई बातों को सुनकर फ्रायड उसके रोग के कारण को तर्क कर लेता था।

(3) मुक्त साहचर्य विधि (Free Association Method)-कुछ रोगियों पर मोह-निद्रा या सम्मोहन का प्रभाव नहीं पड़ता था तो ऐसे रोगियों की चिकित्सा के लिए उसने 'स्वतंत्र साहचर्य' विधि का प्रयोग किया। फ्रायड ने मानव मन का विश्लेषण करने के लिए युक्तियाँ (विधि) निकालीं।

गत 40-50 वर्षों में नवफ्रायडियन (विशेषकर केरेन हार्नी, सुलीवान) एवं अहं विश्लेषक (Ego-analytic) (विशेषकर इरिक्सन (Erikson), हॉर्टमैन (Hortman) आदि) के विचार मनोवैश्लेषिक चिकित्साओं में मिश्रित हो गए हैं। इसे कभी-कभी मनोगतिकी चिकित्सा के नाम से भी सम्बोधित करते हैं। इस नवीन मनोश्चिकित्सा पद्धति का सार तत्त्व यह है कि इससे चिकित्सा अवधि को लघु, अधिक अद्यतन एवं भविष्योन्मुखी बनाने का प्रयास किया गया है साथ ही इसमें अचेतन तथा रक्षा प्रक्रमों के महत्त्व को स्वीकृत करते हुए स्वतंत्र साहचर्य एवं स्वप्न विश्लेषण जैसी, अधिक समय लेने वाले प्रविधियों के उपयोग न करने के लिए कहा गया है। इस प्रकार की मनश्चिकित्सा पद्धति, फ्रायड की चिकित्सा पद्धति की तुलना में अधिक सक्रिय तथा निदेशात्मक है। इतना ही नहीं, इस प्रकार की चिकित्सा बाल्यावस्था के मानसिक संघर्षों पर अधिक बल न डालते हुए, वर्तमान समस्या एवं सम्बन्धों पर अधिक जोर डालता है। फ्रायडियन मनश्चिकित्सा की तुलना में नवफ्रायडियन मनश्चिकित्सा कम अवधि में पूरा होने वाली चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ कम गहन भी है।